

कक्षा 12 (हिंदी) - 'कविता के बहाने' (कँवर नारायण): विस्तृत पाठ योजना एवं शिक्षण संसाधन

खंड 1: पाठ का सार एवं अवलोकन

1.1 परिचयात्मक आलेख

शिक्षक साथियों, नमस्कार। इस शिक्षण संसाधन में आपका स्वागत है। यहाँ हम RBSE/CBSE कक्षा 12 हिंदी अनिवार्य की NCERT पाठ्यपुस्तक 'आरोह भाग-2' के काव्य खंड के पाठ 3, कँवर नारायण की प्रसिद्ध कविता 'कविता के बहाने', के लिए एक विस्तृत और गहन पाठ योजना प्रस्तुत कर रहे हैं। यह पाठ योजना आपके कक्षा शिक्षण को सुगम और प्रभावी बनाने के उद्देश्य से तैयार की गई है, ताकि आपको विस्तृत व्याख्या, काव्य सौंदर्य, NCERT प्रश्नों के हल और परीक्षा-केंद्रित अभ्यास जैसी सभी आवश्यक सामग्री एक ही स्थान पर व्यवस्थित रूप से प्राप्त हो सके।

1.2 पाठ अवलोकन

यह तालिका पाठ से संबंधित मुख्य जानकारी का एक त्वरित अवलोकन प्रदान करती है, जिससे शिक्षक अपनी कक्षा की योजना प्रभावी ढंग से बना सकते हैं।

विवरण	जानकारी
कक्षा	12
विषय	हिंदी (अनिवार्य)
पुस्तक	आरोह भाग-2 (काव्य खंड)
पाठ	3. कविता के बहाने
कवि	कँवर नारायण
अनुमानित समय	45 मिनट (1 कालांश)

इस योजना का 45 मिनट की समयावधि में विभाजित होना इसकी व्यावहारिकता को दर्शाता है। यह सैद्धांतिक ज्ञान के साथ-साथ कक्षा के वास्तविक समय प्रबंधन की चुनौतियों को भी ध्यान में रखता है, जिससे यह एक उपयोगी और कार्यान्वयन योग्य शिक्षण उपकरण बनता है।

1.3 शैक्षणिक उद्देश्य एवं सामग्री

इस पाठ के सफल समापन पर विद्यार्थियों द्वारा प्राप्त किए जाने वाले ज्ञान और आवश्यक शिक्षण सामग्री का विवरण नीचे दिया गया है।

सीखने के उद्देश्य (Learning Objectives):

- विद्यार्थी कविता की असीम संभावनाओं और उसकी प्रकृति को समझ सकेंगे।
- विद्यार्थी कविता की तुलना चिड़िया, फूल और बच्चे से करते हुए उसके विशिष्ट स्वरूप का विश्लेषण कर सकेंगे।
- विद्यार्थी कविता में प्रयुक्त बिंबों, प्रतीकों और भाषा की सहजता को पहचान सकेंगे।
- विद्यार्थी RBSE/CBSE परीक्षा पैटर्न के अनुसार सभी प्रकार के प्रश्नों का उत्तर देने में सक्षम हो सकेंगे।

आवश्यक सामग्री (Required Materials):

- पाठ्यपुस्तक 'आरोह भाग-2'
- श्यामपट्ट/व्हाइटबोर्ड और मार्कर/चॉक
- चिड़िया, फूल और खेलते हुए बच्चे के चित्रों वाला चार्ट (वैकल्पिक)

खंड 2: कवि कुँवर नारायण: जीवन एवं साहित्यिक परिचय

कविता के मर्म को समझने के लिए उसके रचयिता के दृष्टिकोण को समझना आवश्यक है। यह खंड कवि कुँवर नारायण के जीवन और साहित्यिक योगदान पर प्रकाश डालता है।

2.1 जीवन परिचय

कुँवर नारायण (जन्म: 19 सितंबर, 1927; निधन: 2017) 'नयी कविता' आंदोलन के एक सशक्त हस्ताक्षर और प्रमुख स्तंभ थे। उत्तर प्रदेश में जन्मे कुँवर नारायण को नागर संवेदना का कवि माना जाता है। उन्होंने 1950 के आसपास काव्य-लेखन की शुरुआत की और अपनी विशिष्ट शैली से हिंदी साहित्य में एक अलग पहचान बनाई।

2.2 साहित्यिक विशेषताएँ

कुँवर नारायण की कविता में व्यर्थ का उलझाव, अखबारी सतहीपन और वैचारिक धुंध के बजाय संयम, परिष्कार और एक साफ़-सुथरापन स्पष्ट दिखाई देता है। जीवन को उसकी समग्रता में समझने वाला एक खुलापन उनके कवि-स्वभाव की मूल विशेषता है। उनकी रचनाएँ जटिल विषयों को भी सहजता से प्रस्तुत करती हैं। 'आत्मजयी' जैसे प्रबंध काव्य की रचना कर उन्होंने हिंदी साहित्य में भरपूर प्रतिष्ठा प्राप्त की।

2.3 प्रमुख रचनाएँ एवं सम्मान

प्रमुख रचनाएँ:

- काव्य संग्रह: 'चक्रव्यूह' (1956), 'परिवेश: हम-तुम', 'अपने सामने', 'कोई दूसरा नहीं', 'इन दिनों'।
- प्रबंध काव्य: 'आत्मजयी'।
- कहानी संग्रह: 'आकारों के आस-पास'।

प्रमुख सम्मान: उन्हें साहित्य अकादेमी पुरस्कार, व्यास सम्मान, कबीर सम्मान और भारतीय साहित्य के सर्वोच्च पुरस्कार 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' (2005) से सम्मानित किया गया था।

2.4 भाषा-शैली

कुँवर नारायण की भाषा और विषय में अद्भुत विविधता है। उनकी भाषा में एक विशेष प्रकार का संयम और स्पष्टता है। वे अपनी कविताओं में सीधी घोषणाओं और फैसलों से बचते हुए पाठक को सोचने के लिए प्रेरित करते हैं। उनकी कविताओं के बीज शब्द हैं- संशय, संभ्रम और प्रश्नाकुलता, जो पाठक को एक गहरे वैचारिक धरातल पर ले जाते हैं।

खंड 3: कविता का विस्तृत विश्लेषण एवं सौंदर्य बोध

यह खंड कविता की पंक्तियों में निहित गहरे अर्थों और उसके कलात्मक सौंदर्य का अनावरण करता है।

3.1 पद्यांश-वार विस्तृत व्याख्या

कविता को तीन भागों में विभाजित कर उसकी सरल व्याख्या प्रस्तुत की गई है।

पद्यांश 1: "कविता एक उड़ान है... चिड़िया क्या जाने?"

- सरलार्थ: कवि कहते हैं कि कविता कल्पना की एक उड़ान है, ठीक वैसे ही जैसे चिड़िया आकाश में उड़ती है। लेकिन कविता की उड़ान और चिड़िया की उड़ान में एक मौलिक अंतर है। चिड़िया की उड़ान की एक भौतिक सीमा होती है; वह कुछ दूर उड़कर थक जाती है या किसी स्थान पर रुक जाती है। परंतु कविता कल्पना के पंख लगाकर देश और काल की सीमाओं से परे उड़ सकती है। उसकी उड़ान असीम है। इस असीम उड़ान के

गहरे अर्थ को बेचारी चिड़िया नहीं समझ सकती।
पद्यांश 2: "कविता एक खिलना है... फूल क्या जाने?"

- सरलार्थ: यहाँ कवि कविता की तुलना फूलों के खिलने से करते हैं। कविता भी फूलों की तरह खिलकर अपने भावों, विचारों और सौंदर्य की सुगंध बिखेरती है। लेकिन यहाँ भी एक गहरा अंतर है। फूल खिलने के कुछ समय बाद मुरझा जाता है और उसकी सुगंध समाप्त हो जाती है। इसके विपरीत, कविता एक बार खिलकर यानी रचे जाने के बाद हमेशा के लिए अपनी महक बिखेरती रहती है। वह कालजयी होती है, कभी नहीं मुरझाती। बिना मुरझाए हमेशा महकते रहने का यह रहस्य फूल नहीं समझ सकता।

पद्यांश 3: "कविता एक खेल है... बच्चा ही जाने।"

- सरलार्थ: अंत में, कवि कविता की तुलना बच्चों के खेल से करते हैं और यहाँ उन्हें गहरी समानता दिखती है। जिस प्रकार बच्चे खेलते समय किसी भी प्रकार की सीमा, भेदभाव या अपने-पराए का बंधन नहीं मानते और सभी घरों को एक कर देते हैं, उसी प्रकार कविता भी शब्दों का एक निश्छल खेल है। वह भी किसी सीमा में नहीं बँधती और अपनी संवेदना से सभी को अपना बना लेती है, सभी के दिलों को जोड़ देती है। इस समानता के कारण कवि कहते हैं कि कविता के इस वास्तविक, सीमाहीन स्वरूप को केवल एक बच्चा ही समझ सकता है।

इस कविता की संरचना अत्यंत महत्वपूर्ण है। कवि एक त्रिकोणीय तर्क प्रस्तुत करते हैं: चिड़िया, फूल और बच्चा। पहले दो उदाहरणों (चिड़िया और फूल) का प्रयोग विरोधाभास के माध्यम से यह स्थापित करने के लिए किया गया है कि कविता क्या नहीं है—वह सीमित भौतिक उड़ान या क्षणिक सौंदर्य नहीं है। इसके बाद, तीसरे उदाहरण (बच्चा) का प्रयोग समानता के माध्यम से यह स्थापित करने के लिए किया गया है कि कविता वास्तव में क्या है—एक सीमाहीन, सार्वभौमिक और सबको एक करने वाला खेल। यह संरचना कविता के केंद्रीय भाव को अत्यंत प्रभावी ढंग से पाठक तक पहुँचाती है।

3.2 काव्य सौंदर्य

कविता के भाव और कला पक्ष का विश्लेषण उसे और गहराई से समझने में सहायक है।

भाव पक्ष (Thematic/Emotional Aspect): इस कविता में कवि ने कविता की अपार संभावनाओं को दर्शाया है। कविता की रचनात्मक ऊर्जा किसी भी भौतिक या वैचारिक सीमा में नहीं बँधती। वह चिड़िया की उड़ान से भी ऊँची और फूल के खिलने से भी अधिक स्थायी है। अंततः, कविता बच्चों के खेल की तरह निश्छल, सीमाहीन और मानवता को एक करने वाली शक्ति है।

कला पक्ष (Artistic/Technical Aspect):

- भाषा: सरल, सहज और प्रवाहमयी खड़ी बोली का प्रयोग किया गया है, जो भावों को सीधे पाठक तक पहुँचाती है।
- शैली: मुक्त छंद का सुंदर प्रयोग है। शैली प्रश्नात्मक ('चिड़िया क्या जाने?') और संवादात्मक है, जो पाठक को संवाद के लिए आमंत्रित करती है।
- अलंकार: 'कविता की उड़ान भला चिड़िया क्या जाने' जैसी पंक्तियों में वक्रोक्ति अलंकार का सौंदर्य है। पूरी कविता में कविता का मानवीकरण किया गया है।
- बिंब योजना: कविता में दृश्य बिंब (उड़ान, खिलना, बच्चों का खेल) अत्यंत सजीव और प्रभावशाली हैं, जो पाठक के मन पर गहरा प्रभाव छोड़ते हैं।

खंड 4: कक्षा-शिक्षण की चरण-दर-चरण प्रक्रिया

यह खंड एक प्रभावी कक्षा सत्र के लिए एक संरचित pedagogical दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है, जो आधुनिक शिक्षण पद्धतियों के अनुरूप है।

4.1 चरण 1: पूर्व ज्ञान से जोड़ना (Engage - 5 मिनट)

कक्षा की शुरुआत इन प्रश्नों से करें ताकि विषय के प्रति छात्रों की रुचि जागृत हो सके और वे सक्रिय रूप से चर्चा में भाग लें:

- आपके अनुसार कविता क्या है? क्या इसकी कोई सीमा होती है?
- कविता ऐसा क्या कर सकती है जो एक चिड़िया या एक फूल नहीं कर सकते?
- बच्चों के खेल और कविता में आपको क्या समानता दिखती है?

4.2 चरण 2: पाठ की प्रस्तुति एवं व्याख्या (Explore & Explain - 20 मिनट)

- सस्वर वाचन: शिक्षक उचित हाव-भाव, लय और आरोह-अवरोह के साथ कविता का सस्वर वाचन करें ताकि कविता का संगीत और भाव छात्रों तक पहुँच सके।
- विस्तृत व्याख्या: इसके बाद, खंड 3.1 में दी गई पद्यांश-वार विस्तृत व्याख्या के आधार पर छात्रों को कविता का अर्थ समझाएँ।

4.3 चरण 3: सौंदर्य बोध पर चर्चा (Elaborate - 10 मिनट)

छात्रों के साथ कविता के भाव पक्ष और कला पक्ष पर चर्चा करें। उन्हें कविता में प्रयुक्त अलंकारों, बिंबों और भाषा की विशेषताओं को पहचानने के लिए प्रोत्साहित करें, जैसा कि खंड 3.2 में विश्लेषण किया गया है।

4.4 चरण 4: मूल्यांकन एवं गृहकार्य (Evaluate - 10 मिनट)

- कक्षा-कार्य: छात्रों की समझ का आकलन करने के लिए त्वरित प्रश्न पूछें, जैसे: 'सब घर एक कर देने के माने' का आशय क्या है? कविता और फूल के खिलने में क्या मुख्य अंतर है?
- गृहकार्य: NCERT अभ्यास के प्रश्न संख्या 1, 3, और 4 तथा RBSE परीक्षा केंद्रित अभ्यास से सप्रसंग व्याख्या का प्रश्न हल करने के लिए दें।

खंड 5: NCERT अभ्यास-प्रश्नों के विस्तृत हल

यह खंड पाठ्यपुस्तक में दिए गए प्रश्नों के विस्तृत और आदर्श उत्तर प्रदान करता है, जो छात्रों को परीक्षा की तैयारी में सहायता करेंगे।

प्रश्न 1: इस कविता के बहाने बताएँ कि 'सब घर एक कर देने के माने' क्या है?

- उत्तर: 'सब घर एक कर देने के माने' का अर्थ है भेदभाव, अलगाव और सीमाओं को समाप्त कर देना। जिस प्रकार बच्चे खेलते समय जाति, धर्म, अमीर-गरीब या अपने-पराए का भेद नहीं करते और सभी घरों में एक समान भाव से खेलते हैं, उसी प्रकार कविता भी शब्दों के माध्यम से समाज को बाँटने वाली सभी दीवारों को गिरा देती है। वह किसी एक व्यक्ति, वर्ग या देश की नहीं होती, बल्कि संपूर्ण मानवता की होती है। वह अपनी संवेदना से सभी को एक सूत्र में पिरो देती है।

प्रश्न 2: 'उड़ने' और 'खिलने' का कविता से क्या संबंध बनता है?

- उत्तर: 'उड़ने' और 'खिलने' का कविता से गहरा संबंध है, लेकिन कवि इन दोनों क्रियाओं की सीमाओं को दिखाकर कविता की असीमता को सिद्ध करते हैं।
 - उड़ना: चिड़िया की उड़ान भौतिक है और उसकी एक निश्चित सीमा है। इसके विपरीत, कविता कल्पना की उड़ान है जो देश, काल और भाषा की सीमाओं से परे है।
 - खिलना: फूल का खिलना भी अस्थायी है, वह कुछ समय बाद मुरझा जाता है। इसके विपरीत, कविता एक बार रचे जाने के बाद अमर हो जाती है। उसका प्रभाव और सौंदर्य कभी समाप्त नहीं होता।

प्रश्न 3: कविता और बच्चे को समानांतर रखने के क्या कारण हो सकते हैं?

- उत्तर: कवि ने कविता और बच्चे को समानांतर इसलिए रखा है क्योंकि दोनों के स्वभाव में अद्भुत समानताएँ हैं:
 1. सीमाओं का अभाव: बच्चे और कविता, दोनों ही किसी सीमा में नहीं बँधते।
 2. रचनात्मकता और खेल: दोनों का आधार खेल है। बच्चा वस्तुओं से खेलता है और कवि शब्दों से। दोनों ही अपनी रचनात्मक ऊर्जा से नई दुनिया का सृजन करते हैं।

- निश्छलता: बच्चे का मन निश्छल होता है और एक अच्छी कविता भी किसी पूर्वाग्रह से मुक्त होती है। इन्हीं कारणों से कवि को चिड़िया और फूल की तुलना में बच्चे और कविता में अधिक समानता दिखाई देती है।

प्रश्न 4: कविता के संदर्भ में 'बिना मुरझाए महकने के माने' क्या होते हैं?

- उत्तर: कविता के संदर्भ में 'बिना मुरझाए महकने के माने' हैं कविता का कालजयी और अमर होना। फूल खिलने के बाद एक निश्चित समय पर मुरझा जाता है और उसकी सुगंध समाप्त हो जाती है। लेकिन कविता का प्रभाव समय के साथ समाप्त नहीं होता। सदियों पहले लिखी गई कविताएँ भी आज उतनी ही प्रासंगिक और आनंददायक हैं। उनका संदेश, भाव और सौंदर्य हमेशा जीवित रहता है और पाठकों के मन को सुगंधित करता रहता है। यही कविता की अमरता है।

खंड 6: RBSE परीक्षा-केंद्रित अभ्यास सामग्री

यह खंड विशेष रूप से राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (RBSE) के परीक्षा पैटर्न को ध्यान में रखकर तैयार किया गया है, जिसमें विभिन्न प्रकार के प्रश्न प्रारूप शामिल हैं।

6.1 कवि परिचय (उत्तर सीमा 80 शब्द)

प्रश्न: कवि कुँवर नारायण का साहित्यिक परिचय दीजिए।

- उत्तर: कुँवर नारायण (1927-2017) 'नयी कविता' दौर के प्रमुख नागर संवेदना के कवि हैं। उन्होंने 'चक्रव्यूह', 'इन दिनों' जैसे काव्य संग्रह और 'आत्मजयी' जैसी प्रसिद्ध प्रबंध काव्य रचा। उनकी कविता में वैचारिक धुंध के बजाय संयम, परिष्कार और साफ-सुथरापन है। भाषा और विषय की विविधता उनकी विशेषता है। जीवन को समग्रता में देखने की खुली दृष्टि के कारण उनकी कविताओं में संशय और प्रश्नाकुलता के भाव मिलते हैं। उन्हें साहित्य अकादेमी और ज्ञानपीठ पुरस्कार जैसे सर्वोच्च सम्मानों से अलंकृत किया गया।

6.2 सप्रसंग व्याख्या

पद्यांश: "कविता एक खेल है बच्चों के बहाने... सब घर एक कर देने के माने बच्चा ही जाने।"

- संदर्भ: प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'आरोह भाग-2' में संकलित कवि कुँवर नारायण की कविता 'कविता के बहाने' से उद्धृत है।
- प्रसंग: यहाँ कवि ने कविता की तुलना बच्चों के खेल से करते हुए उसकी सीमाहीन प्रकृति और सबको एक करने की शक्ति को उजागर किया है।
- व्याख्या: कवि कहते हैं कि कविता भी बच्चों के खेल की तरह शब्दों का एक खेल है। जिस प्रकार बच्चे खेलते समय अपने-पराए, घर या किसी भी सीमा का बंधन नहीं मानते और सभी को एक समान बना देते हैं, ठीक उसी प्रकार कविता भी किसी सीमा में नहीं बँधती। वह अपनी संवेदना और भावों से सभी को एक कर देती है। इस सीमाहीन एकता के अर्थ को एक निश्छल बच्चा ही समझ सकता है।
- विशेष: (1) भाषा अत्यंत सरल और सहज है। (2) कविता और बच्चों के खेल में सुंदर सादृश्यता स्थापित की गई है। (3) मुक्त छंद का प्रयोग है। (4) 'बच्चा ही जाने' पंक्ति कविता के मर्म को गहराई देती है।

6.3 बहुचयनात्मक प्रश्न (MCQ)

1. 'कविता के बहाने' कविता में कविता की तुलना किससे नहीं की गई है? (क) चिड़िया (ख) फूल (ग) पतंग (घ) बच्चा

- उत्तर: (ग) पतंग

2. कविता की उड़ान को असीम क्यों माना गया है? (क) वह कल्पना के पंखों से उड़ती है (ख) वह बहुत तेज़ होती है (ग) वह कभी नहीं रुकती (घ) वह हवा में उड़ती है

- उत्तर: (क) वह कल्पना के पंखों से उड़ती है

6.4 अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न (उत्तर सीमा 20 शब्द)

प्रश्न 1: कविता की उड़ान और चिड़िया की उड़ान में क्या मौलिक अंतर है?

- उत्तर: चिड़िया की उड़ान की एक निश्चित सीमा होती है, जबकि कविता की कल्पना की उड़ान देश और काल की सीमाओं से परे, असीम होती है।

प्रश्न 2: कवि के अनुसार कविता के सही अर्थ को कौन समझ सकता है और क्यों?

- उत्तर: कवि के अनुसार कविता के सही अर्थ को एक बच्चा ही समझ सकता है, क्योंकि वह भी कविता की तरह ही सीमा और बंधन नहीं मानता।

6.5 लघूत्तरात्मक प्रश्न (उत्तर सीमा 40 शब्द)

प्रश्न 1: 'कविता के बहाने' कविता का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए।

- उत्तर: इस कविता का प्रतिपाद्य कविता की शक्ति, व्यापकता और उसकी असीम संभावनाओं को प्रकट करना है। कवि बताते हैं कि कविता की रचनात्मक ऊर्जा किसी भी सीमा में नहीं बँधती और वह बच्चों के खेल की तरह सभी को एक सूत्र में पिरोने की क्षमता रखती है।

प्रश्न 2: फूल और कविता के खिलने में क्या अंतर बताया गया है?

- उत्तर: फूल का खिलना एक निश्चित अवधि के लिए होता है, जिसके बाद वह मुरझाकर अपनी सुगंध खो देता है। इसके विपरीत, कविता का खिलना शाश्वत होता है। एक बार रचे जाने के बाद वह हमेशा अपनी भाव-सुगंध बिखेरती रहती है और कभी नहीं मुरझाती।

6.6 दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न (उत्तर सीमा 60-80 शब्द)

प्रश्न 1: 'कविता के बहाने' कविता यह कैसे सिद्ध करती है कि कविता का स्वरूप बच्चे की तरह सीमाहीन है?

- उत्तर: कविता में कवि पहले चिड़िया की उड़ान और फूल के खिलने से कविता की तुलना करते हैं, लेकिन दोनों को सीमित पाते हैं। अंत में वे कविता को बच्चे के खेल के समानांतर रखते हैं। जिस प्रकार एक बच्चा खेलते समय अपने-पराए, घर-बाहर की सीमाओं को नहीं मानता और सभी घरों को एक कर देता है, उसी प्रकार कविता भी काल, समाज और भाषा के बंधनों को तोड़कर सभी से आत्मीय संबंध स्थापित करती है। अतः बच्चे की तरह कविता भी सीमाहीन और सर्वव्यापी है।

प्रश्न 2: 'कविता के बहाने' कविता में कवि की आशावादिता किस प्रकार प्रकट हुई है?

- उत्तर: यह कविता उस दौर में लिखी गई है जब यांत्रिकता के दबाव में कविता के अस्तित्व पर संकट की आशंका जताई जा रही थी। ऐसे में कवि कुँवर नारायण कविता की अपार संभावनाओं को पुनः स्थापित करते हैं। वे चिड़िया और फूल की सीमाओं को दिखाकर यह सिद्ध करते हैं कि कविता की रचनात्मक ऊर्जा कभी समाप्त नहीं हो सकती। बच्चे के खेल से उसकी समानता दिखाकर कवि यह आशा व्यक्त करते हैं कि जब तक दुनिया में निश्छलता, रचनात्मकता और सीमाहीन कल्पना मौजूद है, तब तक कविता का भविष्य भी उज्ज्वल है।

खंड 7: पूरक सामग्री एवं निष्कर्ष

7.1 अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न (FAQ)

यह खंड कविता से संबंधित कुछ सामान्य प्रश्नों के संक्षिप्त और सटीक उत्तर प्रदान करता है।

इस कविता का मुख्य उद्देश्य क्या है?

- इस कविता का मुख्य उद्देश्य यांत्रिकता के दबाव में कविता के अस्तित्व को लेकर आशंकित लोगों को कविता की अपार संभावनाओं से परिचित कराना है। यह कविता की शक्ति, व्यापकता और अमरता को सिद्ध करती है।

कविता बच्चे के खेल के समान कैसे है?

- कविता बच्चे के खेल के समान है क्योंकि दोनों में कोई सीमा नहीं होती। जैसे बच्चा खेलते समय अपने-पराए का भेद भूलकर सभी घरों को एक कर देता है, वैसे ही कविता भी भावों और विचारों के स्तर पर सभी सीमाओं को तोड़कर संपूर्ण मानवता को एक सूत्र में बाँधती है।

7.2 अंतिम विचार

यह आशा की जाती है कि कुँवर नारायण की कविता 'कविता के बहाने' पर आधारित यह विस्तृत पाठ योजना आपके लिए उपयोगी सिद्ध होगी। इसे शिक्षकों की जरूरतों को ध्यान में रखकर तैयार किया गया है ताकि एक ही स्थान पर संपूर्ण शिक्षण और परीक्षा सामग्री उपलब्ध हो सके। इस संसाधन का कक्षा में रचनात्मक उपयोग छात्रों को कविता की गहरी समझ विकसित करने में निश्चित रूप से मदद करेगा।